International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 Sept – Oct 2022

लिखित भाषा का उद्भव एवं विकास

DR.LAKSHMI.V
M S Ramaiah College of Arts, Science and Commerce, Bangalore City University
Karnataka
Corresponding Author- **DR.LAKSHMI.V**
Email id: contactlakshmimurugan@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.7276797

अधिकतम अनुसंधान मौखिक भाषाओं के उद्भव एवं विकास पर किए गए हैं । लेकिन लिखित भाषा का उद्भव भी किसी क्रमानुसार परंपरा से ही जन्मा होगा, इसमें संदेह नहीं । लिखित भाषा का रूप पहले-पहल वाणिज्य के माध्यम से शुरू हुआ । किसी व्यापारी ने पहले-पहल अपने सामानों के आयात-निर्यात में हुई परेशानी को कम करने के विक्रय किए गए सामानों का चित्र बनाकर भेजते थे । यही चित्रHieroglyphsका आधारभूत रूप माना जाता है । आगे चलकर यही चित्ररूप लिखित भाषा का आधार बना। कुछ सालों पहले तक विद्वानों का यह विचार था कि लिखित भाषा की शुरूआत दक्षिणी मेसोपोटामिया के प्रांतों में हुई । लेकिन अब सबूतों के तौर पर यह कहा जा सकता है कि लिखित भाषा की शुरूआत मिस्र से लेकर सिंधु नदी के प्रांतों तक फैली हुई थी । यह भाषा STIMULUS DIFFUSION.(एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के संस्कार को नए तरीके से अपनाना) के माध्यम से एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक फैला होगा । लिखित भाषा को जादू जैसे समझा जाता था । साधारण बोलचाल के अवसरों के लिए लिखित भाषा का प्रयोग नहीं होता था । Pictographic System से लिखित भाषा में बहुत सारे शब्दकोशों का निर्माण हुआ। जैसे किसी ने परिचित वस्तु को देखा और उस वस्तु का नाम बोल दिया और उसे चित्रों के सहारे मिट्टी के फलक पर उतार दिया । इस तरह की व्यवस्था को चित्रात्मक प्रणाली कहा जाता है । 1520 तक सुमेरियन में लिखित भाषा का विकास हुआ । 1420 तक इसी सुमेरियन लिखित भाषा का प्रयोग कई प्रदेशों में विकसित हुआ जिसका प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में भी किया गया । यहां तक कि मिस्र के लोगों ने भी इस सुमेरियन भाषा को अपनाया । 50 ई०पू० तक Diplomatic Communication में Cuneiform Script (कीलाकारलिपि) का इस्तेमाल हुआ । इसके बाद a, e, i, o, u का अविष्कार ग्रीक से विकसित C को अलग Sorry दिया जहां'K'Sound का प्रयोग होता है । W, U, Jका अविष्कार लैटिन लिखित प्रणाली कोसबसे बेहतर माना गया । 1905-1909 के दौरान लैटिन वर्णमाला में परिवर्तन किया गया । Asian Language

कैसे एशियाई भाषा का विकास हुआ ?

एशियाई भाषा की शुरूआत चीनी भाषा से हुई थी । चीनी लिखित भाषा की शुरूआत हड्डियों, बांस की झाड़ियों, मिट्टी के Tablets पर बहुत सरल चित्रण के साथ शुरू हुई । यह चित्रण उनके लिए किया जाता था जिनके नाम जोर से बोले जाते थे । ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं चलने वाले कॉलम में लिखा जाता था । समय के साथ इसमें भी अधिक परिवर्तन हुआ । इस दौरान अधिक कुशल लिखित भाषा का विकास हुआ । इस चित्रित भाषा का विकास कई क्षेत्रों में हुआ, जैसे प्यार के लिए एक माँ और बच्चे का चित्र बनाया जाता था । पूर्व दिशा दर्शाने के लिए उगते हुए सूरज को दिखाया जाता था ।

तीसरी शताब्दी से Small Seal Scripts की शुरूआत हुई । उस समय यह लिपि मौलिक लिपि में परिवर्तित नहीं हुई थी । 200 ई० के आसपास लकड़ी की पद्धति का उपयोग कम और और Hair Brush का उपयोग ज्यादा होने लगा । इसमें कुछ तकनीकी परिवर्तन करके क्यूरियल लिपि का विकास हुआ । यह अधिक मौलिक लिपि के रूप में विकसित हुई। ज्यादातर पत्राचार के लिए इसका इस्तेमाल किया गया । दैनिक उपयोग के लिए कम सटीक एवं Abbreviatedरूप का विकास हुआ ।

चीनी लिखित भाषा को अपनाने वालों में जापानियों ने सबसे ज्यादा आंकड़ें परिवर्तित किए । जापानियोंविद्वानों ने अपनी कुछ लिखित भाषा होने के कारण चीनी भाषा को ही अपनाया । जापानी संस्कृति में चीनी भाषी सिलेविक शब्द का इस्तेमाल होने लगा । चीन जो एकपदीय (Monosyllabic) भी जापानी लेखन के लिए उपयुक्त नहीं थी । चीनी Script में जापानी बढ़ना धीमाएवं बहुत ही पेचीदा कार्य था । इसलिए चीनी भाषा से कुल 26

आंकड़ों को जैसे a, o, e, I u को चुनकर जापानी लिखित भाषा का विकास किया गया । एक है हीरागाना और दूसरा काटागाना ।

इसी तरह कोरियाई भाषा का भी विकास चीनी भाषा से ही हुआ । लेकिन आगे चलकर यूरोपीय भाषा के प्रभाव से एक अलग कोरियाई भाषा का जन्म हुआ ।

लिखित भाषा का अंतAlphabetic Principle की खोज पर समाप्त हुआ । यद्यपि दुनिया भर में प्रयोग हो रही भाषाओं की संख्या अब भी हजारों में है, तथापि इस समय इन भाषाओं को लिखने के लिए लगभग दो दर्जन लिपियों का ही प्रयोग हो रहा है और भी गहराई में जाने पर पता चलता है कि संसर में केवल तीन प्रकार की ही मूल लिपिया हैं :-

1. चित्रलिपि
2. ब्राह्मीलिपि - दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्व एशिया में प्रयुक्त लिपियां ।
3. फोनेश्चियन से व्युत्पन्न लिपियां - सम्प्रति यूरोप, मध्य एशिया एवं उत्तरी अफ्रीका में प्रयुक्त लिपियां ।

भाषा एवं लेखन प्रणाली की यात्रा अनंत काल से चलती आ रही है । इसमेंप्रत्येक काल में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं, फिर भी मूल भाषा का आविर्भाव एवं उसका विकास अत्यंत जटिल एवं अनुमानों के आधार पर आधारित है । इसमें कोई संदेह नहीं कि भाषा अगर विकसित नहीं हुई होती तो आदिमानव आधुनिक मानव नहीं बनता सकता था ।

Reference :

1. हिस्ट्री ऑफ़ लैंग्वेजस :-सम्राट सिंह
2. ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ़ लैंग्वेजस :-जया. एस. नागेंद्र
3. गूगल इंसाइकिलॉपीडिया